

सत्र 4: व्यवस्थाविवरण 5-8

डॉ सिंथिया पार्कर

यह डॉ. सिंथिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह व्यवस्थाविवरण 5-8 पर सत्र 4 है।

परिचय

इसलिए आज, हम व्यवस्थाविवरण 5, 6 और 7 को देखना शुरू करने जा रहे हैं। हम देखेंगे कि हम कितनी दूर तक जाते हैं। लेकिन हम बस यह याद रखने जा रहे हैं कि जैसा कि हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक को देख रहे हैं, हमने अब तक भौगोलिक स्थिति से संबंधित बहुत सारे विवरण देखे हैं जहां लोग रहे हैं - वे जिन शहरों में गए हैं, लोग वे समूह जिनके चारों ओर वे गए हैं, जिन सड़कों पर उन्होंने यात्रा की है। हमारे पास ऐतिहासिक आख्यानों की बहुत सारी व्याख्याएँ हैं, इसलिए वे अतीत में कहाँ थीं और अब वे कहाँ हैं। और जैसे ही हम व्यवस्थाविवरण 5 शुरू करते हैं, हम एक बिल्कुल नए प्रकार के उपदेश में प्रवेश करते हैं। यह मूसा का एक अलग उपदेश है।

व्यवस्थाविवरण 5:1 और व्यवस्थाविवरण 6 से तुलना

तो, आइए आगे बढ़ें और व्यवस्थाविवरण 5 को पढ़ना शुरू करें। यह एक परिचय के साथ शुरू होने जा रहा है जिसे अध्याय 6 में एक बार फिर दोहराया जाएगा। इसलिए, हमारे पास व्यवस्थाविवरण 5 श्लोक 1 में है, "तब मूसा ने सभी इस्राएल को बुलाया और उनसे कहा, 'शेमा इज़राइल।" तो याद रखें, हमने सुनने के लिए, सुनने के लिए, शेमा की यह पुकार सुनी है। हमने इसे अध्याय 4 में सुना है, और इसलिए एक बार फिर, हम इसे अध्याय 5 की शुरुआत में प्राप्त कर रहे हैं, इसलिए, "शेमा इज़राइल, हे इज़राइल, विधियों और अध्यादेशों को सुनो," हमने इसे पहले भी सुना है। "जो मैं आज तुम्हारे सामने इसलिये बोल रहा हूँ कि तुम उन्हें सीखो और ध्यान से देखो।"

और फिर, हमारे पास होरेब या माउंट सिनाई में मूसा के साथ प्रभु के संवाद की यह व्याख्या है। अब अध्याय 6, मेरे साथ अध्याय छह की ओर पलटें क्योंकि अध्याय 6 उसी तरह से

शुरू होता है, सिवाय इसके कि 6 इसे प्रेरणा देने वाला है। तो, जहां अध्याय 5 केवल सुनने, सुनने और करने का आह्वान है। अध्याय 6 इसमें यह प्रेरणा भी जोड़ता है कि आपको ऐसा क्यों करना चाहिए। तो, अध्याय 6 में, श्लोक 1 कहता है, "अब यह आज्ञा, अर्थात् विधि और नियम हैं, जिन्हें तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें सिखाने की आज्ञा दी है, कि तुम उन्हें उस देश में कर सको जहां तुम उसका अधिकारनी होने पर जा रहे हो।" ताकि तू और तेरा बेटा, और तेरा पोता अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानकर उसकी सब विधियों और आज्ञाओं को जो मैं तुझे सुनाता हूं, जीवन भर मानते रहें, जिस से तेरी आयु बहुत लंबी हो। हे इस्राएल, तू सुन और सावधान हो ऐसा करने में सावधान रहो, कि तुम्हारा भला हो, और तुम बहुत बढ़ जाओ, जैसा तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने तुम से उस वचन के अनुसार किया है जिसमें दूध और मधु की धाराएं बहती हैं।

व्यवस्थाविवरण 5:2 - ऐतिहासिक अनुस्मारक

इसलिए, हालाँकि अध्याय एक ही तरह से शुरू होते हैं, अध्याय 6 क्यों के लिए प्रेरणा विकसित करने वाला है। तो, आइए अध्याय 5 पर वापस जाएँ।

अध्याय 5, इसलिए हमारे पास परमेश्वर द्वारा दी गई विधियों और निर्णयों को सुनने का आह्वान है। और हमें यह छोटी सी ऐतिहासिक कथा मिलती है जो लोगों को यह याद दिलाने के लिए है कि ये कानून और निर्णय कहाँ से आ रहे हैं। तो, श्लोक 2 में, "हमारे परमेश्वर यहोवा ने होरेब में हमारे साथ एक वाचा बाँधी। प्रभु ने अपनी वाचा हमारे पूर्वजों के साथ नहीं, बल्कि हममें से उन लोगों के साथ बाँधी जो आज यहाँ रहते हैं।"

अब यह उसी पर वापस जाने वाला है जिसके बारे में हमने पिछले व्याख्यान में भी बात की थी, क्योंकि, फिर से, मूसा अपने तत्काल दर्शकों से बात कर रहा है, जो जॉर्डन नदी, जॉर्डन नदी के तट पर उसके साथ खड़ा है।

वह कहता है कि, "भगवान ने ये हमें, यहां होरेब पर्वत पर खड़े हम सभी को दिया है।" तो ऐतिहासिक रूप से, नहीं, यह पिछली पीढ़ी थी; यह उनके पूर्वज थे. लेकिन फिर, हम देख रहे हैं कि कैसे व्यवस्थाविवरण इन पीढ़ियों को आपस में जोड़ता है जहां पूर्वजों की कहानी ही उनकी कहानी है। वे उस कहानी में अपने पूर्वजों से जुड़े हैं ताकि वे इसे अपनी कहानी कह सकें।

व्यवस्थाविवरण 5 और निर्गमन 20 से तुलना

इसलिए पद 4, "क्योंकि यहोवा ने पहाड़ पर आग के बीच में से तुम से आमने-सामने बातें कीं, जबकि मैं उस समय यहोवा का वचन तुम्हें सुनाने के लिये यहोवा और तुम्हारे बीच में खड़ा था। क्योंकि तुम आग के मारे डर गए, और पहाड़ पर न चढ़े। उस ने कहा, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुम्हें दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया। मैं। तुम अपने लिये कोई मूर्ति या उसकी कोई प्रतिमा न बनाना जो ऊपर स्वर्ग में, या नीचे पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के नीचे जल में हो। तुम उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ईर्ष्यालु ईश्वर हूँ। पितरों के अधर्म का दण्ड अपने पुत्रों, अर्थात् तीसरी, चौथी पीढ़ी तक को दण्ड देना, जो मुझ से बैर रखते हैं; परन्तु जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करुणा करना।

अब मैं यहीं विराम देने जा रहा हूँ। यह वास्तव में निर्गमन 20 में हमने जो देखा है उसका दोहराव है। इसलिए, यदि आप निर्गमन 20 पर वापस जाएं और निर्गमन 20 में उद्धृत दस आज्ञाओं की तुलना करें, तो आपको यहां व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में बड़ी समानता मिलेगी।

ऐसी कुछ चीजें हैं जो मैं इंगित करना चाहता हूँ जो इस बात के लिए अद्वितीय हैं कि व्यवस्थाविवरण इस भाग को कैसे पढ़ाएगा। हालाँकि कोई आवश्यक रूप से अद्वितीय नहीं है, लेकिन यह व्यवस्थाविवरण के विषयों से संबंधित है। हम पहले ही पिछले व्याख्यान में इस बारे में बात कर चुके हैं कि कैसे व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में एक संविदात्मक विषय है, इतना कि हम यह भी कह सकते हैं कि पुस्तक एक सुजरेन-जागीरदार संधि की तरह व्यवस्थित है।

हजारों को हेसेड

उन चीजों में से एक जो उस पर छूती है या उस विषय पर आधारित है, यहीं दस आज्ञाओं में है। यह उन समयों में से एक है जब एक पुराने नियम के प्रोफेसर के रूप में लोग कहते हैं कि पुराने नियम का भगवान बहुत कठोर और कठोर है और हर समय क्रोधित रहता है, लेकिन नए नियम का भगवान अनुग्रह से भरा है। यह उन चीजों में से एक है जिन्हें मैं इंगित करना पसंद करता हूँ क्योंकि हमारे पास श्लोक 9 में यह है। "आप अन्य देवताओं की पूजा नहीं करेंगे या

उनकी सेवा नहीं करेंगे। प्रभु के लिए, आपका भगवान बच्चों पर पिता के अधर्म का दंड देने वाला ईर्ष्यालु ईश्वर है उन लोगों की तीसरी और चौथी पीढ़ी पर जो मुझसे नफरत करते हैं।" और हाँ, यह थोड़ा अटपटा और थोड़ा कठिन लगता है। शब्द "नफरत" और शब्द "प्रेम" अक्सर संविदात्मक शब्द हो सकते हैं। इसलिए, नफरत जरूरी नहीं कि भावनाओं का आंतरिक उबाल हो, जितना उन लोगों के लिए है जो अनुबंध तोड़ते हैं। तो प्रतिशोध, अनुबंध तोड़ने के प्रभाव, तीसरी और चौथी पीढ़ी तक चलते हैं, सिवाय इसके कि वाक्य के अंत में कोई अवधि नहीं होती है। यह जारी है और कहता है, "लेकिन यह भगवान है; वह प्रेमपूर्ण-कृपा दिखाएगा," जो हिब्रू शब्द है जिसे हेसेड कहा जाता है। हेसेड, जो प्रेम-कृपा है, उन शब्दों में से एक है जिसका अंग्रेजी में बहुत अच्छा अनुवाद नहीं होता है। यह बहुत समृद्ध और गहरा है। यह एक निरंतर प्रेम, एक धैर्यवान प्रेम और असुविधाजनक प्रेम है। वह जो हमेशा वाचा के प्रति वफादार रहता है। कहा जाता है कि भगवान ने हमेशा प्यार से परहेज किया है। तो, भगवान एक लंबी स्मृति वाला है; कौन जानता है उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ ये अनुबंध बनाए हैं, और वह हमेशा उस अनुबंध के प्रति वफादार रहेगा।

और वह हिचकिचाहट, उस गहरे समृद्ध निरंतर प्रकार के हिचकिचाहट वाले प्यार का वादा हजारों लोगों तक जाएगा। सिर्फ तीन पीढ़ियाँ, दो पीढ़ियाँ, या चार नहीं बल्कि हजारों, "उन लोगों के लिए जो मुझसे प्यार करते हैं।" और यह जरूरी नहीं है कि हेसेड प्रेम ही हो, बल्कि वे लोग हों जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं; भगवान हजारों लोगों को बदले में उसी तरह प्यार करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि यह इस बात का एक बहुत ही सुंदर चित्रण है कि भगवान के पास वास्तव में एक अद्भुत हृदय है, अपने लोगों के लिए एक दृढ़ हृदय है।

शबात अंतर तुलना देउत। 5 और निर्वासन. 20

तो यहाँ दस आज्ञाओं पर वापस जाँ। तो, हमारे पास फिर से निर्गमन 20 से यह उद्धरण है; एकमात्र अंतर यह है कि जब हम शब्बाथ या शब्बत का पालन करने लगते हैं, तो व्यवस्थाविवरण एक अलग कारण बताता है कि हमें शब्बाथ का पालन क्यों करना चाहिए। तो यह पद 12 से शुरू होता है। इसमें है, "विश्राम के दिन को पवित्र मानना, जैसा कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी

है। छः दिन तक परिश्रम करना, और अपना सारा काम करना, परन्तु सातवां दिन तेरे यहोवा का विश्रामदिन है।" हे परमेश्वर, इसमें तू या तेरा बेटा, या बेटा, या दास, या दासी, या तेरा बैल, या गदहा, या तेरा कोई पशु, या तेरे संग रहनेवाले परदेशी, कोई काम न करना। मेरी भी तरह मेरी भी सेवा करो।" यह एक बहुत समावेशी सूची है। यह सिर्फ घर का मुखिया नहीं है जिसे आराम मिलता है; यह घर का मुखिया है, घर के बाकी सभी लोग। यह मवेशी हैं, हर कोई काम करता है, निर्वाह करता है। यह सब सृजन का है। यह हर किसी का आराम है।

"तू स्मरण रखना, कि तू मिस्र देश में दास या, और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा वहां से निकाल लाया। इस कारण तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे सब्त का दिन मानने की आज्ञा दी है।"

अब मेरे साथ निर्गमन 20 की ओर चलें। आइए देखें कि निर्गमन संस्करण क्या कहता है। ये आवश्यक रूप से परस्पर विरोधी तर्क नहीं हैं, क्योंकि ये अलग-अलग हैं; वे सिर्फ इन कानून संहिताओं के लेखन में अंतर दिखाते हैं। इसलिए निर्गमन 20 में, श्लोक 8 में, हमारे पास भी आदेश है, "सब्त को याद रखो।" श्लोक दस में, हमारे पास लोगों की एक सूची है, फिर से, उन लोगों की सर्व-समावेशी सूची है जो सब्बाथ का पालन करते हैं। और श्लोक 11 में, यह कहा गया है, "छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी को समुद्र और जो कुछ उन में है सब बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया। इस कारण यहोवा ने सब्त के दिन को आशीष दी और उसे पवित्र किया।" इसलिए निर्गमन 20 में, सब्बाथ का पालन करने के पीछे का तर्क सृष्टि कथा के कारण है क्योंकि भगवान ने रचना की, और सृष्टि के अंत में, वह अपनी रचना पर सिंहासन पर बैठता है, हर चीज को देखता है जैसा उसने बनाया है और कहता है कि यह अच्छा है। और यह है वह सिंहासनारूढ़ विचार कि ईश्वर राजा है।

व्यवस्थाविवरण 20, कुछ अधिक याद है क्योंकि आप गुलाम हुआ करते थे और हम मिस्र को याद कर रहे हैं जब सब कुछ उल्टा था, है ना? जब तुम पर अत्याचार किया गया, जब वह अत्याचार की धधकती भट्टी थी, परमेश्वर ने तुम्हें उसमें से निकालकर एक अच्छी जगह में लाया। और उसके कारण, हम बैठेंगे और सब्त का पालन करेंगे। यह याद रखने का एक तरीका भी है कि

ईश्वर ही वह है जो अपने राज्य पर सिंहासनारूढ़ है, लेकिन यह वह भी है जो पलायन पर वापस लौटता है ताकि लोग अपने इतिहास के हर समय, जिस तरह से ईश्वर ने कार्य किया है, उसके प्रति सचेत रहें। इतिहास, जिस तरह से भगवान ने उनसे अतीत में प्यार किया है, यही सब्त के दिन छुट्टी लेने और भगवान को याद करने का कारण है जो प्रभारी है, जिसने हमारे लिए यह सब किया है।

दस आज्ञाएँ और इज़राइली कानून

अतः व्यवस्थाविवरण 5 का शेष भाग दस आज्ञाओं की व्याख्या से होकर गुजरता है। अब हमने देखा है कि बहुत लंबे समय से लोग कहते रहे हैं कि दस आज्ञाएँ मूल रूप से सभी इज़राइली कानूनों का अवलोकन हैं। इसलिए मध्य युग के बाद से, रब्बियों ने देखा है कि दस आज्ञाएँ बड़ी श्रेणियों के रूप में कार्य करती हैं। हम हिब्रू बाइबिल के अन्य सभी 613 कानूनों को ले सकते हैं, और हम उन्हें किसी बिंदु पर या किसी भी तरह डिकालॉग में फिट कर सकते हैं। कुछ लोगों ने उस विचार को अपनाया है और कहा है कि यह एक और तरीका है जिससे हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक को व्यवस्थित कर सकते हैं। इसलिए संभावित रूप से, हमने पिछले व्याख्यानों में इस बारे में बात की थी कि कैसे व्यवस्थाविवरण का प्रारूप लगभग एक संविदात्मक प्रारूप है, या हम इसे मूसा द्वारा दिए गए उपदेशों के एक समूह के रूप में व्यवस्थित कर सकते हैं, या हम इसे शाब्दिक रूप से व्यवस्थित कर सकते हैं ताकि हम अपना रास्ता बना सकें अध्याय 12 में शुरू होने वाली कानून संहिता तक।

हम यह भी कह सकते हैं कि यहां व्यवस्थाविवरण अध्याय 5 में, हम कानून संहिता की शुरुआत डेकोलॉग के पुनर्कथन के साथ कर रहे हैं जहां 10 शब्द या दस आज्ञाएं और उसके बाद आने वाली हर चीज उसमें फिट बैठती है। तो, ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने इसके बारे में लिखा है। तो, आप उस पर शोध कर सकते हैं। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक को जिस प्रकार व्यवस्थित किया गया है, उसके बारे में सोचने का यह वास्तव में एक शानदार तरीका है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे आप देखेंगे कि जैसे-जैसे हम अध्याय 12, 13 और 14 से आगे बढ़ेंगे, पहले दो अध्याय केवल ईश्वर और ईश्वर की आराधना पर केंद्रित होंगे।

और फिर अध्याय, एक बार जब हम 19 तक पहुंचते हैं और हम 25 से गुजरते हैं, तो हम देख रहे हैं कि लोगों को समाज में एक दूसरे के साथ कैसे बातचीत करनी चाहिए। तो, यह बहुत अच्छी तरह से विभाजित है, जैसे दस आज्ञाएँ विभाजित हैं। लोगों को परमेश्वर के प्रति किस प्रकार बातचीत और व्यवहार करना चाहिए? लोगों को एक दूसरे के साथ कैसे बातचीत करनी चाहिए?

व्यवस्थाविवरण 6

अब हम आगे बढ़ेंगे और व्यवस्थाविवरण अध्याय 6 की ओर बढ़ेंगे। हमने पहले ही उल्लेख किया है कि व्यवस्थाविवरण 6 एक तरह से शुरू होता है जो अध्याय 5 के समान है। इसलिए, यह "ये आज्ञाएँ हैं, ये क़ानून हैं" पर भी वापस जाता है।, " और हमें यह विचार आ रहा है कि मूसा, इस उपदेश में, लोगों को यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि उनके लिए इसका क्या अर्थ है, क्योंकि वे इस भूमि में जाने के लिए तैयार हो रहे हैं।

तो, मैं पहले ही श्लोक एक और दो पढ़ चुका हूँ। तो हमारे पास प्रेरक भाषण है, इन विधियों और आज्ञाओं का पालन करने के पीछे की प्रेरणा; ऐसा इसलिए है ताकि वे इस वादा किए गए देश में जा सकें और एक पूर्ण जीवन जी सकें।

व्यवस्थाविवरण 6:4 - शेमा

मैं श्लोक 4 पर ध्यान केंद्रित करना चाहूंगा। इसलिए, यह कहता है, "हे इस्राएल सुनो।" तो एक बार फिर, शेमा इज़राइल। प्रभु हमारा ईश्वर है, प्रभु एक है। इस वाक्य में हमारे पास कोई क्रिया नहीं है। इसलिए, हमें यह पता लगाने की आवश्यकता है कि इसका अनुवाद कैसे किया जाए, जो इस विशेष वाक्य को एक अद्भुत वाक्य बनाता है। यह वास्तव में गहरा और अर्थ से समृद्ध है।

तो शेमा "सुनो" है। इज़राइल "इज़राइल" है। हमारे पास यहोवा है, "अडोनाई।" एलोहेनु "हमारा ईश्वर" है, फिर से यहोवा, और एहाद "एक" है। तो, हम क्रिया को कहां रखें?

हम कह सकते हैं, "शेमा इज़राइल।" यह सुंदर है "सुनो इज़राइल।" ये चार शब्द ही हैं जो हमारे लिए वास्तव में दिलचस्प हैं। हम यहां यहोवा के ठीक बाद "है" लगा सकते हैं। तो हम कह

सकते हैं, "यहोवा हमारा परमेश्वर है। यहोवा एक है।" हम कह सकते हैं, "हे यहोवा, हमारा परमेश्वर एक ही परमेश्वर है।" यदि हम बाइबल के इन सभी अलग-अलग अनुवादों को देखें, तो हमें इस श्लोक की व्याख्या करने के 8, 9, 10 अलग-अलग तरीके मिल सकते हैं। यह पद शेमा है जैसा कि लोग अब इसे कहते हैं, व्यवस्थाविवरण 6:4 से शेमा। "शेमा, इज़राइल याहवे एलोहेनु, याहवे एहद ।" यह यहूदी पूजा के मूल में है। यह इज़राइली पूजा के मूल में था। यह आज तक यहूदी पूजा के मूल में है। यह बहुत शक्तिशाली और पवित्र वाक्य।

इस वाक्य में यह दृढ़ घोषणा है कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा एक ही परमेश्वर है। वह अकेला है. वह एकमात्र व्यक्ति है जिसकी इस्राएलियों को पूजा करनी चाहिए। उसके आसपास कोई अन्य नहीं है. और इसलिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम उसे " है" कहां रखते हैं , इसमें चार शब्दों में बहुत कसकर एकेश्वरवादी विचार है कि ईश्वर एक है। वह अकेला है, और इज़राइल उसका है। तो वह व्यवस्थाविवरण 6:4 है।

व्यवस्थाविवरण 6:1-15

अब आइए व्यवस्थाविवरण 6 1 से 15, वाक्यों या छंदों के इस समूह को देखना जारी रखें, क्योंकि यह व्याख्यान के अंत में आएगा। तो, यह व्यवस्थाविवरण 6 का पहला संपूर्ण भाग है।

व्यवस्थाविवरण 6:5 सबसे बड़ी आज्ञा - परमेश्वर से प्रेम करो

इसलिए, शेमा के बाद, हमें इस बात पर विचार करना होगा कि लोगों के लिए इसे याद रखना कितना महत्वपूर्ण है। तो पद 5, "तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन से, अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम करना।" अब यह एक श्लोक आपको बहुत परिचित लग सकता है, खासकर यदि आप न्यू टेस्टामेंट काफी समय से पढ़ रहे हैं। यह कविता काफी हद तक दर्शाती है कि रब्बियों, फरीसियों और सद्कियों ने यीशु के साथ इस बारे में बातचीत की कि सबसे बड़ी आज्ञा क्या है। आह, सबसे बड़ी आज्ञा, "तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।"

हालाँकि, यदि आप न्यू टेस्टामेंट संस्करण के आदी हैं, तो इसमें आपके अलावा आपका पड़ोसी भी शामिल है। लेकिन यह वास्तव में यहाँ व्यवस्थाविवरण 6 में नहीं है। तो वह आखिरी

छोटा सा अंश कहाँ से आता है? यह वास्तव में लैव्यव्यवस्था 19 से आता है। इसलिए, लैव्यव्यवस्था 19 में, अगर हम हिब्रू में इन शब्दों को देखें, तो "और तुम प्रेम करोगे" जो व्यवस्थाविवरण 6:5 से शुरू होता है। यह हिब्रू शब्दों का एक दिलचस्प संयोजन है जिसे केवल दो बार दोहराया गया है। वे दोनों समय लैव्यव्यवस्था में हैं। लैव्यव्यवस्था 19 में, इन सभी चीजों की एक पूरी सूची है जो लोगों को करनी चाहिए क्योंकि ईश्वर उनका ईश्वर है, और उनमें से एक है "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।" और यह वैसे ही शुरू होता है जैसे यह श्लोक करता है। "और तुम अपने पड़ोसी से प्रेम रखोगे," क्यों? क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा परमेश्वर है।

नए नियम के समय तक, लोगों ने इस समानता और भाषा पर ध्यान दिया और कहा: "सबसे बड़ी आज्ञा क्या है?" ठीक है, यह व्यवस्थाविवरण में है, आपको अपने परमेश्वर यहोवा से अपने पास मौजूद हर चीज़ से प्यार करना चाहिए, लेकिन क्योंकि हम अपने पास मौजूद हर चीज़ से भगवान से प्यार कर रहे हैं, इसका मतलब है कि हमें अपने पड़ोसी से भी अपने समान प्यार करना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 6:6 पारिवारिक संदर्भ में शिक्षण और सीमांत स्थानों को चिह्नित करने पर

इसलिए व्यवस्थाविवरण में कहा गया है कि "तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे हृदय से, अपने सारे प्राण से, अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।" और श्लोक छह में, "ये बातें जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें। तू इन्हें अपने बेटों को यत्नपूर्वक सिखाना। घर में बैठे, चलते, मार्ग, मार्ग में चलते समय इनकी चर्चा किया करना।" जब तुम उठते हो तो लेटते हो।" तो, ये गुण हैं जब आप चरम विपरीत लेते हैं, और इसका मतलब है, और बीच में सब कुछ। तो, यह सिर्फ तब नहीं है जब आप खड़े हैं या चल रहे हैं। यह तब है जब आप खड़े होते हैं, जब आप चलते हैं, जब आप लेटते हैं, जब आप आप खा रहे हैं, जब आप सांस ले रहे हैं, जब आप घर में हैं, और जब आप सार्वजनिक रूप से बाहर हैं तो आप बात कर रहे हैं और अपने बच्चों को पढ़ा रहे हैं। इसलिए, व्यवस्थाविवरण व्यक्ति की भूमिका पर बहुत जोर देता है। माता-पिता अपने-अपने घरों में अपने बच्चों को वे नियम, विधियां, और आज्ञाएं सिखाएं जो परमेश्वर ने उन्हें दी हैं।

वह आगे कहता है, "तू उनको चिन्ह के लिये अपने हाथ पर बान्धना, और वे तेरे माथे पर ललाट के समान बनें। तू उनको अपने घर की चौखटों और फाटकों पर लिखना। तब ऐसा होगा जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस देश में ले आता है, जिसके विषय में तू ने अपने पुरखा इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से शपथ खाई थी, कि तुझे बड़े और वैभवशाली नगर दूंगा, जिसे तू ने नहीं बनाया, और अच्छे अच्छे पदार्थों से भरे हुए मकानों को तू ने नहीं भरा, और तू ने हौद खुदवाए। और दाख की बारियां और जलपाई के वृद्ध न खोदे, परन्तु न लगाए, और खाकर तृप्त हुए, तो सावधान रहो, कि जो यहोवा तुम को मिस्र देश से दासत्व के घर से निकाल ले आया, उसे भूल न जाओ। और मैं वहीं रुकने जा रहा हूं।

तो, इन श्लोकों में हमारा बहुत जोर है और अध्याय 6, श्लोक 1-15, इसे अध्याय 11 में फिर से दोहराया जाएगा। याद रखने पर जोर है। और वे कैसे याद रख सकते हैं इसके लिए निर्देश हैं। तो, इसमें एक तकनीक शामिल है। इसलिए लोगों को सीमांत स्थानों को चिह्नित करने के लिए कहा गया है। अतः सीमांत स्थान वे स्थान हैं जो बीच में हैं। तो, शायद एक द्वार के बारे में सोचें। तो क्या दरवाज़ा दालान में शामिल है या दरवाज़ा कमरे के अंदर है?

यह एक तरह से दोनों का है, और यह एक तरह से किसी का भी नहीं है। द्वार को सीमांत स्थान माना जाता है। यह एक स्थान से दूसरे स्थान तक संक्रमणकालीन स्थान है। यह किनारों को चिह्नित करता है।

तो व्यवस्थाविवरण 6 में जहां यह शब्द "याद रखना" बहुत आवश्यक है। व्यवस्थाविवरण कहता है कि जिस तरह से आप ऐसा कर सकते हैं वह सीमांत स्थानों को चिह्नित करना है। ठीक है, तो आइए एक नजर डालते हैं कि वे कौन सी जगहें हैं। इसलिए, जैसे ही हमने उन्हें पढ़ा, हमने पहले ही इस बारे में बात की कि ये कानून आपके हृदय पर कैसे होने चाहिए, आपके भीतर अंतर्निहित होने चाहिए।

"तू उन्हें चिन्ह के लिये अपने हाथ पर बान्धना।" आपका हाथ आपके और अन्य लोगों के प्रति आपकी कार्रवाई के बीच अंतिम स्थान है। हाथ आपके और दूसरों के बीच बातचीत का माध्यम है।

और इसलिए, जब आप दूसरों के साथ बातचीत करते हैं तो यह याद दिलाने के लिए इस कानून को अपने हाथ पर बांध लें कि यह निर्देशों की संहिता के तहत है जो भगवान ने आपको दिया है।

"उन्हें ललाट पर या अपने सिर के सबसे आगे रखें।" कुछ लोग इसका अनुवाद "आंखों के बीच" करते हैं। इसका अनुवाद करने का सबसे अच्छा तरीका थोड़ा अस्पष्ट है, लेकिन "आंखों के बीच" यह आपकी धारणाओं जैसा होगा। आपके आस-पास की दुनिया। तो, हमारे पास भगवान के शब्द या ये शब्द हैं; वे आपके दिल पर, आपके अंतरतम अस्तित्व पर, आपके हाथ पर जहां आप दूसरों के साथ बातचीत करते हैं, और आपकी आंखों के बीच, बाहर की आपकी धारणा की रक्षा करने के तरीके के रूप में लिखे गए हैं दुनिया।

"तू इन्हें अपने घर की चौखटों पर भी लिखना।" अपने निजी स्थान से, जैसे ही आप शहर में प्रवेश करते हैं और सार्वजनिक स्थान पर होते हैं "और अपने शहर के द्वार पर।" इसलिए, जैसे-जैसे आपका शहर आपके संगठित पड़ोस के बीच से निकलकर इसके चारों ओर की दुनिया की ओर बढ़ता है।

तो याद रखने का तरीका वास्तव में अपने अंतरतम से लेकर सबसे सार्वजनिक स्थान तक इस तथ्य को चिह्नित करना है कि एक व्यक्ति के रूप में आप और जिनके साथ आप रहते हैं वे सब ईश्वर के नियम के अनुसार जी रहे हैं। यह आपके लिए याद रखने का एक तरीका है।

तो, अगर मैं आपसे पूछूं, तो आप श्लोक 1-15 का वर्णन कैसे करेंगे? आप क्या कहेंगे? आप क्या लिखेंगे? यदि हमने इन छंदों को कहा है, तो हमने सिर्फ शेमा को शामिल करने पर ध्यान दिया है, जिसमें याद रखने का विचार भी शामिल है, व्यवस्थाविवरण 6:1-15 के मुख्य विचार क्या हैं?

आपके कुछ अलग विचार हो सकते हैं। मुझे यकीन है कि वास्तव में कुछ भी गलत नहीं है, लेकिन मैं कहूंगा कि इसका बहुत कुछ संबंध यह न भूलने से है कि ईश्वर कौन है, यह एक ईश्वर है। और न भूलना या याद रखना इस बात का मूल है कि लोगों को क्या करना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 6:14-15

तो, चलिए आगे बढ़ते हैं। मैं श्लोक 14 से शुरू करके पढ़ने जा रहा हूँ। "तुम अन्य देवताओं, अपने आस-पास के लोगों के किसी अन्य देवता का अनुसरण नहीं करना। क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे बीच में है। वह ईर्ष्यालु परमेश्वर है; अन्यथा, तेरे परमेश्वर यहोवा का क्रोध तुझ पर भड़क उठेगा, और वह तुझे पृथ्वी पर से मिटा डालेगा। तू अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न करना, जैसा तू ने मस्सा में उसकी परीक्षा की थी। मस्सा का वास्तव में अर्थ है "परीक्षण।" यह एक ऐसी कहानी है जिसे आपको वापस जाकर निर्गमन 17 में पढ़ना होगा। मैं आपको वास्तव में ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करूँगा। वापस जाएं और पढ़ें क्योंकि उपदेश में मूसा लोगों को संबोधित कर रहे हैं, वह उनके अतीत की एक घटना को संबोधित कर रहे हैं जिसके बारे में वे जानते हैं। यह वह समय था जब वे प्यासे थे, उन्हें पानी की आवश्यकता थी, और उन्होंने शिकायत की। और भगवान अंततः उनके लिए पानी उपलब्ध कराते हैं। लेकिन अब समय आ गया है कि वे कहें, मुझे नहीं लगता कि ईश्वर वास्तव में हमारे सर्वोत्तम हितों को ध्यान में रखता है। यही वह घटना है जिसका जिक्र मूसा कर रहे हैं।

"तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं, उसकी चितौनियों और विधियों का, जो उसने दिया हो, पूरी रीति से मानना; और जो काम यहोवा की दृष्टि में ठीक और भला हो वही करना, जिस से तेरा भला हो, और तू जाओ और उस अच्छे देश को अपने अधिकार में कर लो, जिसे यहोवा ने तुम्हारे साम्हने से सब शत्रुओं को निकाल कर देने की शपथ खाई है, जैसा यहोवा ने कहा है। और आगे को जब तुम्हारा बेटा तुम से पूछे, कि चितौनियों और बातों का क्या अर्थ है? हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है? तब तू अपने पुत्र से कहना, हम मिस्र में फिरौन के दास थे, और यहोवा बलवन्त हाथ से हम को मिस्र से निकाल लाया। फिर यहोवा ने मिस्र, फिरौन और सब लोगोंके विरुद्ध हमारी आंखोंके साम्हने बड़े बड़े दुःख के चिन्ह और चमत्कार दिखाए। अपने घराने में से; वह हम को वहां से इसलिये निकाल लाया, कि उस में पहुंचा दे, और जिस देश के विषय में उस ने हमारे पुरखाओं से शपथ खाई थी वह हमें दे दे।"

आपको पहले से ही सुनना शुरू कर देना चाहिए कि यहाँ कोई बात बार-बार हो रही है, है ना? क़ानून और आज्ञाएँ लोगों के लिए हैं ताकि वे अंदर जा सकें और रह सकें। ख़ैर, उन्हें इन आदेशों का पालन करने के लिए क्यों प्रेरित किया जाना चाहिए? क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें पहले ही छुड़ा लिया है, क्योंकि उस ने उन्हें अन्धेर की परिस्थिति से निकाल कर यह देश दिया है।

व्यवस्थाविवरण 6:14-15 परमेश्वर कौन है और उसने क्या किया है

श्लोक 24 में, यह कहा गया है, "इसलिये प्रभु ने हमें इन सब विधियों का पालन करने की आज्ञा दी, कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहें, ताकि हमारी भलाई सदैव बनी रहे, और हमारी उत्तरजीविता बनी रहे, जैसा कि आज है। यह हमारे लिए धार्मिकता होगी, जैसा कि हम करते हैं।" अपने परमेश्वर यहोवा के लिये इस सब आज्ञा का पालन करने में चौकसी करना, जैसा उस ने हमें आज्ञा दी है।

ठीक है, तो एक बार फिर, अगर मैं कहूँ, तो आप व्यवस्थाविवरण 6:14 से 25 तक कैसे वर्णन करेंगे? यह पिछली पंक्तियों से थोड़ा भिन्न है। दोनों का संबंध याद रखने से है, लेकिन यह दूसरा भाग इस बात पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है कि ईश्वर कौन है और उसने क्या किया है ताकि ये क़ानून और आज्ञाएँ उन्हें भूमि में एक पूर्ण जीवन की ओर ले जा सकें। ठीक है, 6:1-15 की अवधारणा और साथ ही 6:14-25 की अवधारणा क्या है, इन दोनों विचारों पर टिके रहें। हम व्याख्यान के अंत में थोड़ी देर में इस पर वापस आएंगे।

व्यवस्थाविवरण 7 भूमि के विविध निवासी और विविध भू-भाग

अब हम अध्याय 7 और अध्याय 7 में जाने जा रहे हैं; मैं इसे इतने विस्तार से नहीं पढ़ूँगा। अध्याय 7 में कुछ ऐसे पहलू हैं जो अध्याय 12 से बहुत मिलते-जुलते हैं। इसलिए अध्याय 12 पर पहुंचने के बाद हम उनमें से कुछ पहलुओं के बारे में बात करेंगे। लेकिन मैं कुछ बातें बताना चाहता हूँ। व्यवस्थाविवरण 7 के बारे में पेचीदा चीजों में से एक इसकी शुरुआत का तरीका है।

तो पद 1 में, यह कहा गया है, "जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस देश में पहुंचाएगा जहां तुम उसका अधिकारी होने के लिये प्रवेश कर रहे हो, और तुम्हारे साम्हने से बहुत सी जातियों को दूर कर देगा।" और फिर हमें एक सूची मिलती है। "हिती, गिर्गाशी, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी,

यबूसी, अर्थात् सात जातियां जो तुम से बड़ी और सामर्थी हैं।" आइए एक सेकंड के लिए इसके बारे में देखें। इन लोगों के समूहों को वास्तव में नाम दिया गया है। इसलिए, जब वे भूमि में जाते हैं, तो यह सामान्य कनानी लोगों से कहीं अधिक होता है। वहाँ ज्ञात लोगों के समूह हैं, और व्यवस्थाविवरण सात, सात अलग-अलग राष्ट्रों को उद्धृत करता है।

अब मैं इस बारे में बात करना चाहता था, इस संदर्भ में नहीं कि भगवान ने उन्हें अंदर जाने और भूमि खाली करने के लिए कहा था, हम इस बारे में तब बात करेंगे जब हम अध्याय 12 पर पहुंचेंगे, लेकिन मैं इस तथ्य पर बात करना चाहता हूँ कि व्यवस्थाविवरण लोगों को पहचानता है वहाँ कौन है। तो, क्या आपको पिछले व्याख्यान याद हैं जब हमने उस भूमि के बारे में बात की थी जिस पर लोग जा रहे हैं? यह बहुत विविधतापूर्ण भूमि है। हमने मानचित्र को देखा और पहाड़ी इलाके को दिखाने के लिए इसका रंग वास्तव में गहरा भूरा था। हमने इसे मिस्र और मेसोपोटामिया के नदी समुदायों की तुलना में स्थापित किया है। हमने कहा, मिस्र और मेसोपोटामिया, उनके पास बहुत कठोर भूमि है जो विशाल साम्राज्यों का समर्थन कर सकती है और लोगों को संवाद करने में मदद कर सकती है, लेकिन वह भूमि पहाड़ी है, यदि आप किनारे पर रहते हैं, तो मुझे आप पर थोड़ा अधिक संदेह है।

आइए मैं आपको उस भूमि की विविधता की कुछ तस्वीरें दिखाता हूँ जो उन लोगों की भूमि है जो विरासत के लिए तैयार हो रहे हैं। तो हमारे पास एक तटीय मैदान है। यहीं पर पलिशती इस तटीय मैदान पर रहने लगे। आप पश्चिम में भूमध्य सागर का नीलापन और तटीय मैदान पर भूमि की समतलता देख सकते हैं। आपको पहाड़ियों में ऊपर जाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। इस विशेष वीडियो में यह तस्वीर थोड़ी धुंधली हो सकती है, लेकिन यह गहरी घाटियाँ दिखाती है। यह किसानों का इलाका है जहाँ आप हर तरफ हरियाली देख सकते हैं। इस प्रकार की भूमि में फसल उगाने के लिए पर्याप्त पानी है। लेकिन पहाड़ी इतनी खड़ी है कि किसानों को वहाँ से गुजरना पड़ता है और जमीन पर छत बनानी पड़ती है ताकि वे पहाड़ी पर सीढ़ियाँ बना सकें ताकि वे वास्तव में पहाड़ियों पर उपज उगा सकें।

ठीक है। तो, आप कल्पना कर सकते हैं कि इस तरह के इलाके में रहने वाले लोगों की, इतना पानी होने पर भी, तटीय मैदान पर रहने वाले किसी भी व्यक्ति की तुलना में पूरी तरह से अलग तरह की जीवनशैली होगी। ज़मीन की बनावट बहुत अलग है।

इसलिए जैसे-जैसे हम पूर्व की ओर बढ़ते हैं, अब भी हमारे पास पहाड़ हैं, लेकिन हमारे पास बहुत कम पानी है। और इसलिए कम पानी के कारण, देखिए ये पहाड़ियाँ कितनी भूरी और बंजर हैं। इन पहाड़ियों में खेती करना बहुत कठिन है। बस पूर्वी हिस्से में, हमारे यहां कम बारिश होती है, कम पानी होता है। इसलिए खेती की तकनीक अलग होनी चाहिए। आप अभी भी खेती कर सकते हैं, लेकिन यह इतना आगे नहीं है, हम पहाड़ियों को उतना नहीं बढ़ा रहे हैं जितना हम घाटियों में पानी ढूँढ रहे हैं, और हम घाटियों में रोपण कर रहे हैं। हम बहुत अधिक चरवाहा देखना शुरू करने जा रहे हैं। ताकि भेड़-बकरियाँ उन पहाड़ियों पर रह सकें।

लेकिन इतना ही नहीं, क्योंकि हमारे पास जंगल भी है। तो यह वास्तव में जुडियन वाइल्डरनेस है। यह बेथलहम शहर के बाहर है। यदि आपको बेथलहम से पूर्व की ओर जाना जारी रखना है, तो यह मेरे द्वारा आपको दिखाई गई आखिरी तस्वीर से भी अधिक बंजर है। तो, जबकि पिछली तस्वीर में, यह कुछ हद तक बंजर था, लेकिन आप अभी भी कुछ खेती कर सकते हैं। यहां मिट्टी की वजह से और पर्याप्त बारिश नहीं होने के कारण खेती संभव नहीं है। यहाँ यह सारा चरवाहा क्षेत्र है। यह तटीय मैदान से काफी अलग है। लेकिन वह सब नहीं है।

हम नीचे उनके दक्षिण तक जा सकते थे। यहीं से हम ऊँटों को उठाना शुरू करेंगे, और यह और भी अधिक बंजर और सूखा है। यहां तो और भी कम बारिश हुई है। तो, इज़राइल की इस भूमि को एक बहुत ही विविध जगह के रूप में सोचें। पारिस्थितिकी तंत्र की जो विविधता है, वह नियमित आधार पर बदलती रहती है। आधुनिक समय में, यदि आप इज़राइल की भूमि पर जाते हैं और यात्रा करते हैं, तो आपको मूल रूप से लगभग 45 मिनट की यात्रा करने की आवश्यकता होती है और जो कुछ भी आप खिड़कियों के बाहर देखते हैं या जो कुछ भी आपकी लंबी पैदल यात्रा के दौरान होता है वह पूरी तरह से बदल जाता है।

इस तरह की भूमि में लोगों को एकजुट करना बहुत मुश्किल है क्योंकि जो लोग इस तरह की भूमि में रहते हैं उनकी बाहरी दुनिया तक पहुंच अलग होती है। उनके पास अलग-अलग कपड़े और अलग-अलग निर्माण सामग्री है। वे बिल्कुल अलग तरीके से कार्य करते हैं। वे एक ऐसी जीवनशैली अपना रहे हैं, जिसमें वे अपने परिवारों का समर्थन समुद्र तट पर रहने वाले लोगों या पहाड़ों पर रहने वाले किसानों की तुलना में अलग तरीके से कर रहे हैं। और इसलिए, जो लोग एक जैसे होते हैं वे एक साथ समूह बनाते हैं, और इतने विविध भूभाग में उन्हें एकजुट करना वास्तव में कठिन है क्योंकि उनकी जीवन शैली अलग-अलग प्रकार की होती है।

हम वास्तव में देख सकते हैं कि कैसे इस भूमि पर, इस्राएली जाने के लिए तैयार हो रहे हैं, इस भूमि ने पहले से ही लोगों को अलग कर दिया है क्योंकि व्यवस्थाविवरण अध्याय 7 में, यह उन लोगों के प्रकार को सूचीबद्ध करता है जो वहां हैं। वहां पहले से ही सात अलग-अलग लोगों के समूह हैं, जो पहले से ही वहां मौजूद हैं, जो एकजुट नहीं हुए हैं, जो एदोम की तरह नहीं हैं, जो मोआब या अम्मोन की तरह नहीं हैं। उन्होंने किसी प्रकार की केंद्रीकृत सरकार नहीं बनाई है क्योंकि परिदृश्य उन्हें अलग कर रहा है।

यह हमारे लिए एक चेतावनी के रूप में कार्य करने वाला है क्योंकि जैसे-जैसे इस्राएली आगे बढ़ रहे हैं, वे जंगल में भटक रहे हैं। इस्राएली 12 जनजातियों से बने हैं, और फिर भी उन्हें इस भूमि में जाना पड़ता है, एक ऐसी भूमि जो इतनी विविधतापूर्ण है। और फिर भी उन्हें यह याद रखना होगा कि वे एक ही लोगों का समूह हैं, जिनका ईश्वर एक है - शेमा इज़राइल। जैसे ही वे अंदर जाएंगे, लोगों के लिए यह एक बड़ी चुनौती होगी।

इसलिए, जब हम फिर से देखना शुरू करते हैं, जब हम अध्याय 12 के करीब पहुंचते हैं, तो हमें इन विचारों को शामिल करना होगा कि इस्राएली इतनी विविधतापूर्ण भूमि में कैसे जा सकते हैं, जो स्वाभाविक रूप से लोगों को अलग करती है और उन्हें उनकी विभिन्नताओं में अलग करती है। पारिस्थितिकी तंत्र. वे एक ईश्वर के प्रति वफादार लोगों के समूह के रूप में कैसे एकजुट रह सकते हैं? व्यवस्थाविवरण के विचार हैं कि हमें अध्याय 12 में वहाँ पहुँचना होगा।

व्यवस्थाविवरण 7 - योद्धा के रूप में भगवान

तो यहां, अध्याय 7 में, हम देखते हैं कि अध्याय 12 के साथ समानताएं हैं। हम वहां पहुंचने जा रहे हैं। हमने देखा कि कई लोगों के समूह हैं, और फिर भी व्यवस्थाविवरण 7, इस अध्याय में भी, लोगों को याद दिलाने जा रहा है, डरो मत क्योंकि भगवान आपका योद्धा है, है ना? हम पहले ही देख चुके हैं कि यह व्यवस्थाविवरण अध्याय 1 में पहले का विषय है। ईश्वर वह है जो अपने लोगों से पहले जाता है। वास्तव में, हम पद 18 में पाते हैं, "हे देश के सब रहनेवालों, तुम उन से न डरना। तुम अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करना, कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने सारे मिस्र में फिरौन से क्या किया।" तो फिर, हम याद कर रहे हैं, और हम उस आदेश को याद कर रहे हैं जो हमें इस भूमि में जाने के लिए साहस प्रदान करता है और यह जानता है कि भगवान ही वह है जो हमसे पहले जा रहा है।

व्यवस्थाविवरण 8 - याद रखना और भूल जाना

तो चलिए अध्याय 8 की ओर बढ़ते हैं। और अध्याय 8 की ओर बढ़ने से पहले, हम याद रखने की इस अवधारणा के बारे में काफी बात कर रहे हैं और यह कितना महत्वपूर्ण है। तो, आइए बस एक क्षण रुकें और कुछ हिब्रू भाषा को देखें और वास्तव में सोचें कि मूल श्रोताओं, बाइबिल के श्रोताओं के लिए इस शब्द का क्या अर्थ है। हम इसके बारे में जो सोचते हैं, यह उससे थोड़ा अलग हो सकता है। तो, "याद रखें" शब्द हिब्रू में ज़कार है। और ज़कार का अर्थ है "वर्तमान में किसी चीज़ के प्रति जागरूक होना," ठीक है? तो, यह आपके दिमाग के पीछे से आपके दिमाग के आगे की ओर खींच रहा है, याद रखने का मतलब है इसे वर्तमान में रखना, वर्तमान में किसी चीज़ के बारे में जागरूक होना।

तो, इसके विपरीत "भूलना" सिर्फ यह भूल जाना नहीं है कि आपने अपनी चाबियाँ कहाँ रखी हैं या अपने पसंदीदा स्टोर के लिए दिशा-निर्देश भूल गए हैं। यह उस तरह की भूलने की बात नहीं है। यह वास्तव में ज्ञान का परित्याग है। तो, जहां ज़कार किसी चीज़ को सबसे आगे खींच रहा है और उसे आपकी स्मृति में, आपकी चेतना में सक्रिय रूप से मौजूद रख रहा है, भूलना वास्तव में उस ज्ञान को त्यागना है।

हमने पिछले व्याख्यान में इस बारे में बात की थी कि कैसे व्यवस्थाविवरण में, लोगों को कानूनों को याद रखने के लिए कभी नहीं कहा जाता है। आपको सभी कानूनों का विवरण याद रखने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन आपको यह याद रखने की ज़रूरत है कि आपका भगवान कौन है, भगवान के कार्य और कर्म क्या हैं। आपको अपना इतिहास याद रखना होगा। और हमने व्यवस्थाविवरण 6 से सीखा कि हम ऐसा इसलिए कर रहे हैं ताकि हम अपने भविष्य के कार्यों को इस आधार पर जी सकें कि ईश्वर कौन है और इसलिए हम भूमि में जा सकते हैं और भूमि में पूर्ण मानव जीवन जी सकते हैं।

स्मृति और भावना

अब स्मृति भी भावना से जुड़ गई है। इसलिए जब हमारे पास घटनाओं की यादें होती हैं जब हम सक्रिय रूप से चीजों को अपने दिमाग में सबसे आगे खींच रहे होते हैं। जब इस्राएली मिस्र में उनके लिए परमेश्वर द्वारा किए गए सभी कार्यों को याद कर रहे थे, तो यह भावना के साथ आता है। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता, या वह भावना जो तब महसूस हुई जब मिस्रवासियों द्वारा उन पर अत्याचार किया जा रहा था। तो, स्मृति भावना उत्पन्न कर सकती है। इसलिए, जब स्मृति और भावनाएं यह संबंध बनाती हैं, तो इसका एक हिस्सा यह है कि आप जुड़ सकते हैं, आपके पास समान परिस्थितियों में किसी अजनबी को उस भावना का श्रेय देने की क्षमता होती है। तो भावना को याद रखने और स्मरण करने का यह विचार इज़राइल के नैतिक व्यवहार से जुड़ा है। उनसे अक्सर कहा जाता है, "याद रखें कि आप एक समय मिस्र में गुलाम थे।" और इस तथ्य की स्मृति के कारण कि वे मिस्र में गुलाम थे, याद रखें कि वह कैसा महसूस होता था। याद रखें कि भावना क्या थी; उस भावना को याद करें जो आपने महसूस की थी जब भगवान ने आपको बाहर निकाला था। इसलिये तुम्हें ऐसे ही लोगों के साथ, जो उत्पीड़ित हैं, ऐसा ही व्यवहार करना होगा। इसलिए, जब हम कुछ कानूनों का अध्ययन करेंगे तो हम इसे ध्यान में रखेंगे।

व्यवस्थाविवरण 8 और समृद्धि

तो अध्याय 8 में समृद्धि, हम उस समृद्धि को सीखने जा रहे हैं जब लोग भूमि पर जाते हैं; भूमि में उन्होंने जिस समृद्धि का अनुभव किया है, वह आत्म-निर्भरता या आत्म-निर्भरता की ओर ले

जा सकती है, जहां वे यह सोचना शुरू कर सकते हैं कि वे ही हैं जिन्हें वह समृद्धि मिली है, बजाय यह पहचानने और याद करने के कि भगवान ने ही उन्हें यह समृद्धि दी है। व्यवस्थाविवरण 8 भी हमारे लिए बहुत कुछ करने जा रहा है ताकि हम उनके जंगल के अनुभव की तुलना उस भूमि की उपज के साथ कर सकें जिसमें वे जाने के लिए तैयार हो रहे हैं।

इसलिए हम व्यवस्थाविवरण 8, श्लोक 1 को पढ़ना शुरू करने जा रहे हैं। "जितनी आज्ञाएं मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन सभी को मानने में तुम सावधान रहना, जिस से तुम जीवित रहो, और बढ़ो, और जिस देश के विषय में यहोवा ने शपथ खाई है उस में जाकर उसके अधिकारनी हो जाओ।" अपने पुरखाओं को दे दो। जिस मार्ग से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे इन चालीस वर्षों में जंगल में ले आया है, उस सब को स्मरण रखना, कि वह तुझे नम्र करे, और तुझे परखे, और जान ले कि तेरे मन में क्या है, कि तू उसकी आज्ञाओं को मानेगा वा नहीं। उस ने तुम्हें नम्र किया, और तुम्हें भूखा रहने दिया। उस ने तुम्हें वह मन्ना खिलाया जो न तुम जानते थे, और न तुम्हारे पुरखा जानते थे, कि तुम्हें समझाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से जीवित नहीं रहता, परन्तु मनुष्य उस सब से जीवित रहता है जो उससे पहले मिलता है यहोवा के मुख से निकला। इन चालीस वर्षों में तेरा वस्त्र पुराना न हुआ, और तेरे पांव में सूजन न हुई। इस प्रकार तू अपने मन में जान ले, कि तेरा परमेश्वर यहोवा हमें वैसे ही ताड़ना देता है, जैसे कोई मनुष्य अपने पुत्र को ताड़ना देता है।।"

तो जंगल को याद रखें लेकिन जंगल में आपके बीच भगवान की उपस्थिति को याद रखें। एक मान्यता है कि यह कठिन था, और फिर भी भगवान वहाँ थे। और इसलिए, जब आप जंगल को याद करते हैं, तो याद रखें कि आप अपने आस-पास के प्राकृतिक तत्वों से अधिक भगवान पर निर्भर हैं। ईश्वर एक पिता के समान है जो अपने लोगों का भरण-पोषण करेगा।

व्यवस्थाविवरण 8:6 जंगल के विपरीत अच्छे अदन जैसी भूमि की छवियाँ

तो अब श्लोक 6 में, हम जंगल के विपरीत, जहां यह कठोर था, भूमि के बारे में छवियां लेना शुरू कर देंगे, उनके कपड़े खराब हो जाने चाहिए थे और जूते खराब हो जाने चाहिए थे, लेकिन वे नहीं हुए अंतर। "इसलिये तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करना, और उसके मार्गों

पर चलना, और उसका भय मानना, क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे अच्छे देश में ले आता है।" वहाँ फिर से एक अच्छा भूमि विचार है, एक ऐसी भूमि जिसमें ईडन-प्रकार की क्षमता है।

"जल के झरनों, फव्वारों और घाटियों और पहाड़ियों से बहने वाले झरनों की भूमि, गेहूँ और जौ, बेलों, अंजीर के पेड़ों और अनारों की भूमि, जैतून के तेल और शहद की भूमि, एक ऐसी भूमि जहाँ तुम तुम बिना किसी घटी के भोजन करोगे, उस में तुम्हें किसी वस्तु की घटी न होगी, वह देश है जिसके पत्थर लोहे के हैं, और जिसकी पहाड़ियों में से तुम तांबा खोद सकते हो।"

मैं यहाँ एक पल के लिए रुकने जा रहा हूँ। व्यवस्थाविवरण जारी रहेगा और सावधान रहने की बात कही जायेगी क्योंकि जब तुम इतनी बहुतायत में जाओगे तो तुम्हारा हृदय ईश्वर से विमुख होना चाहेगा। सावधान रहो क्योंकि चाहे तुम बहुतायत के देश में हो या जंगल जैसे देश में, तुम्हें याद रखना चाहिए कि तुम परमेश्वर पर निर्भर हो।

व्यवस्थाविवरण 8 और कृषि कैलेंडर

अब सूची में से कुछ, यह केवल उत्पादों की एक यूटोपियन सूची नहीं है जिसे ड्यूटेरोनामी सूचीबद्ध कर रही है; व्यवस्थाविवरण यह सूचीबद्ध कर रहा है कि भूमि वास्तव में कैसे कार्य करती है।

तो, मैं आपको यह कैलेंडर दिखाना चाहता हूँ। यह कैलेंडर यही है। यह कृषि वर्ष को दर्शाने का मेरा तरीका है। तो, याद रखें, ये लोग ज़मीन से दूर रह रहे हैं; उनकी आजीविका इस बात पर निर्भर करती है कि वे जहाँ रहते हैं वहाँ से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। वे भूमि के कामकाज और कामकाज के तरीके के अनुसार भूमि के बारे में सोचते हैं। इसलिए, जब वे समय का आयोजन करते हैं, तो वे जमीन पर जिस प्रकार की गतिविधियाँ कर रहे होते हैं, उसके अनुसार समय का आयोजन करते हैं।

आप देखेंगे कि दो अलग-अलग वृत्त हैं। एक आंतरिक वृत्त और एक बाहरी वृत्त है, और अर्धचंद्र, यानी दो वृत्तों के बीच का अंतर, वास्तव में तब होता है जब आपके पास बारिश की संभावना होती है। तो उस देश में यह एकमात्र समय है जब वर्षा हो सकती है। लोग इज़राइल की

भूमि या बाइबिल की भूमि के बारे में बात करेंगे, केवल दो मौसम थे। उत्तरी अमेरिका में, हम चार के बारे में सोचते हैं। लेकिन उन्होंने दो मौसमों के बारे में सोचा, बरसात का मौसम और आपके पास शुष्क मौसम।

अब हमारे पास ऐसे अक्षर हैं जो इसकी परिधि, या वृत्त की परिधि के चारों ओर जाते हैं, और अक्षर दूर से शुरू होते हैं, ऊपर बाईं ओर, हमारे पास एक J और फिर JFMA है। तो वे हैं कि वे वर्ष के अंग्रेजी महीनों के अक्षरों को दर्शाते हैं - जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई। इसलिए, हम जनवरी के अनुसार कैलेंडर का आयोजन करेंगे। 1 जनवरी को, हम कैलेंडर पलटते हैं, और हम एक नया साल शुरू करते हैं।

जिस तरह से भूमि कार्य करती है, उसके अनुसार यह स्वाभाविक नहीं था, और इसलिए इस्राएल के लोगों ने अपने वर्ष को जनवरी के अनुसार व्यवस्थित नहीं किया, जो हमारे लिए बहुत बाद में आया था। उन्होंने ऐसा बारिश शुरू होने के अनुसार किया। इसलिए सितंबर, अक्टूबर में शुरूआती बारिश होती है। इसका मतलब यह है कि हम अभी-अभी शुष्क मौसम से बाहर आए हैं, और हमें धुंध भरी बारिश की ये अच्छी रोशनी, अद्भुत छोटी बूंदें मिलने वाली हैं। सितंबर/अक्टूबर में, उस बारिश का लाभ यह है कि वह धीरे-धीरे जमीन पर गिरती है, यह मिट्टी में समा जाती है, और इससे किसान को बाहर जाकर जुताई करने और शुष्क मौसम में पकी हुई कठोर मिट्टी को तोड़ने का मौका मिलता है। . इसलिए, किसान नवंबर में जुताई करने में सक्षम होते हैं, और दिसंबर में, वे बाहर जाते हैं और अपने खेत में बीज बोते हैं। और फिर दिसंबर तक, हमें बड़े पैमाने पर भारी बारिश वाले बादल आना शुरू हो जाएंगे। इसलिए, जब हम दिसंबर, जनवरी और फरवरी से गुजरते हैं, तो आपको ज़मीन पर सबसे अधिक बारिश होती है। फिर बारिश कम हो जाएगी, और आपको कम से कम बारिश के तूफान देखने को मिलेंगे। आपको फिर से अधिक धुंधले तूफान देखने को मिलेंगे। और मार्च तक, अब हमारे पास आखिरी बारिश होगी। यह कृषि वर्ष में पानी का आखिरी छोटा धक्का है जो किसान की फसलों का उत्पादन करने की अनुमति देगा।

इसलिए, यदि हम ध्यान दें कि दिसंबर में होने वाली जुताई और बुआई मार्च तक हो जाती है, तो हम कटाई शुरू कर सकते हैं। जैसे ही हम कटाई शुरू करते हैं, सबसे पहला उत्पाद जो

कटाई के लिए तैयार होता है वह जौ है जो मार्च में आता है। अप्रैल और मई के दौरान, हमें अपनी गेहूं की फसल मिलनी शुरू हो जाती है। और अब, गेहूं की फसल के अंत तक, हमारे पास और बारिश नहीं होगी। इसलिए, मई से जून की शुरुआत तक, शुष्क मौसम के प्रवेश के साथ बारिश पूरी तरह से बंद हो गई है।

तो, हमारे पास गर्मियों के सूरज की गर्मी है। जब तक हम अगस्त तक पहुंचते हैं, हमारे पास अंगूर की कटाई हो जाती है; हमारे पास अंजीर और अनार हैं। यह सभी बेहतरीन, अद्भुत ग्रीष्मकालीन फल। और अक्टूबर में, ठीक उस समय जब शुरुआती बारिश फिर से शुरू हो सकती है, हमारे पास हरे जैतून और काले जैतून की कटाई होती है। इसलिए, जैतून की फसल किसान द्वारा पूरे कैलेंडर को फिर से शुरू करने से पहले जमीन से निकाला गया आखिरी उत्पाद है।

तो, इस बार यहीं, शुरुआती बारिश, यह रोश हशनाह, वर्ष के प्रमुख, वर्ष की शुरुआत का प्रतीक बनने जा रही है। हालाँकि, मैं चाहता हूँ कि हम इसी पर गौर करें। हम इस कृषि कैलेंडर पर वापस आते रहेंगे क्योंकि जब हम इस्राएलियों द्वारा मनाए जाने वाले त्योहारों पर आते हैं तो यह लागू हो जाता है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि हम इस बारे में सोचें कि अगर भूमि इसी तरह काम करती है, तो इज़राइल में कृषि क्षेत्र भी इसी तरह काम करता है। ये प्राकृतिक उत्पाद हैं जो उस जमीन से निकलते हैं। व्यवस्थाविवरण का इस भूमि से जो परिचय है, उसे हम भूमि के विवरण में सुन सकते हैं।

व्यवस्थाविवरण 8:7 अच्छी भूमि का वर्णन

तो, आइए व्यवस्थाविवरण अध्याय 8 पर वापस जाएँ। मैं श्लोक 7 से शुरू करने जा रहा हूँ, और यह अच्छी भूमि का वर्णन है। "यह झरनों और झरनों के जल का देश है, जो घाटियों और पहाड़ियों से बहता है, गेहूं और जौ, बेलों, अंजीर के पेड़ों, अनार, जैतून के तेल और शहद का देश है।"

क्या आपने उस उत्पाद की सूची के बारे में कुछ नोटिस किया? वे उत्पाद? वे कृषि कैलेंडर के अनुसार क्रम में हैं। तो, यह सिर्फ यह बताने वाली एक यादृच्छिक सूची नहीं है कि आप किसी

देश में जा रहे हैं, और यह उन सभी चीज़ों की प्रचुरता से भरा होने वाला है जिनकी आप कभी इच्छा कर सकते हैं। आप एक देश में जा रहे हैं; ये भूमि के उत्पाद हैं। यह वह क्रम है जिसमें वे जमीन से बाहर आएंगे। वह उत्तम भूमि है। यह वास्तविक स्थान वह अच्छी भूमि है जो परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। और इसमें अच्छा होने की क्षमता है, जैसे ईडन लोगों के लिए अच्छा था।

व्यवस्थाविवरण 8:18: समृद्धि आत्मनिर्भरता की ओर ले जा सकती है

इसलिए जब हम अध्याय 8 पर पहुँचते हैं, तो हम इस विचार को देख रहे हैं कि समृद्धि आत्म-निर्भरता की ओर ले जा सकती है, और इसलिए उन्हें अपना इतिहास याद रखना चाहिए क्योंकि यदि वे इस प्रचुर भूमि में जाते हैं, तो उनका दिल भगवान से दूर हो सकता है।

हमने जंगल की छवियों और भूमि की छवियों के बीच तुलना देखी। जब तक हम पद 18 तक पहुँचते हैं, हमारे पास फिर से यह विचार होता है, "तुम अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करो क्योंकि वही है जो तुम्हें धन कमाने की शक्ति दे रहा है ताकि वह अपनी वाचा को पूरा कर सके, जिसके बारे में उस ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई थी।" यह आज का दिन है।"

यदि तुम भूल जाते हो, तो व्यवस्थाविवरण 8, यह परमेश्वर ही है जो तुम्हें अंदर जाने की अनुमति दे रहा है। यह सब परमेश्वर का कार्य है, इसलिए सावधान रहो कि तुम मत भूलो।

व्यवस्थाविवरण और जंगल में यीशु का प्रलोभन (मैथ्यू 4)

तो बस इस व्याख्यान को बंद करने के लिए। कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिनके बारे में मैं चाहता हूँ कि हम सोचें क्योंकि हम शायद न्यू टेस्टामेंट के बारे में भी सोचते हैं। तो, क्या आपको याद है जब यीशु, अपना सार्वजनिक मंत्रालय शुरू करने से ठीक पहले जब यीशु चल रहा था, तो उसे जॉर्डन के पास जॉन बैपटिस्ट मिला? उसे जॉन बैपटिस्ट द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है, और फिर वह 40 दिनों के लिए जंगल में चला जाता है। उन 40 दिनों के जंगल में रहने के बारे में बाइबल हमें बहुत कुछ नहीं बताती है। यीशु ने क्या किया? उसने क्या सोचा? हम जानते हैं कि उसने उपवास किया था, लेकिन और क्या चल रहा था? हमें कोई अंदाज़ा नहीं है कि बाइबिल के लेखक हमें क्या नहीं बताते हैं। हालाँकि, मुझे अच्छा लगता है, विशेष रूप से एक व्यवस्थाविवरण विद्वान के रूप में मुझे यह कहना अच्छा लगता है कि मुझे लगता है कि यीशु व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर ध्यान केंद्रित

कर रहे थे। यह बहुत से इज़राइली और यहूदी धर्मशास्त्रों के लिए एक मुख्य पुस्तक है। ईश्वर कौन है? क्या हम याद कर रहे हैं कि वह कौन है? क्या हम उसके अनुसार कार्य करना चुन रहे हैं? क्योंकि जब यीशु की परीक्षा होती है, तो सबसे पहली बातें जो उसके मुँह से निकलती हैं, वह सब व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से आती हैं।

इसलिये मेरे साथ चलो; मैं वह संस्करण पढ़ने जा रहा हूँ जो मैथ्यू में है। आइए मैथ्यू 4 की ओर मुड़ें। तो, यह कहता है, "तब यीशु को जंगल में आत्मा के द्वारा शैतान द्वारा प्रलोभित करने के लिए ले जाया गया। और जब वह 40 दिन और 40 रात उपवास कर चुका, तब उसे भूख लगी। और प्रलोभक आया और उससे कहा, 'यदि तू परमेश्वर का पुत्र है।' आइए बस एक सेकंड के लिए रुकें क्योंकि, व्यवस्थाविवरण में, हम पहले ही देख चुके हैं कि परमेश्वर का एक पुत्र है। व्यवस्थाविवरण अध्याय 1 में, इस्राएलियों को परमेश्वर का पुत्र कहा गया है, और संपूर्ण हिब्रू बाइबिल में; इस्राएलियों को ज्येष्ठ पुत्र, परमेश्वर का पुत्र माना जाता है। यीशु अब उस पहचान को अपना रहा है। और इसलिए यहां पहचान का प्रश्न है जहां आरोप लगाने वाला यीशु के पास आता है और कहता है, "यदि आप वास्तव में भगवान के पुत्र हैं, तो इन पत्थरों को रोटी बनने का आदेश दें।" लेकिन उन्होंने उत्तर दिया, 'यह लिखा है, मनुष्य जीवित नहीं रहेगा। केवल रोटी पर ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकलने वाले हर शब्द पर भी।"

ये तो हम पहले भी सुन चुके हैं. यह व्यवस्थाविवरण 8 से निकलता है, यह व्यवस्थाविवरण 8:3 है। अब, जब हम नए नियम के पाठ के बारे में बात कर रहे हैं, तो कभी भी नए नियम का पाठ पुराने नियम के पाठ को संदर्भित करता है, यह कभी भी उद्धृत किए गए एक वाक्य का संदर्भ नहीं दे रहा है। यह संपूर्ण संपूर्ण संदर्भ को संदर्भित करता है। इसलिए, जब मैथ्यू के सुसमाचार में पहले प्रलोभन में यीशु की पहचान पर सवाल उठाया जा रहा है, तो यीशु ने व्यवस्थाविवरण 8:3 के साथ जवाब दिया, लेकिन वह उस खंड की संपूर्णता का उल्लेख कर रहे होंगे।

व्यवस्थाविवरण 8 क्या था? क्या आप जंगल बनाम ज़मीन की तस्वीरें याद कर सकते हैं? क्या आपको याद है कि ईश्वर ने यह प्रदान किया कि जब चीजें अंधकारमय और बंजर दिखती हैं,

तब भी ईश्वर ही है जिसने प्रदान किया? तो, यीशु यहाँ जा रहे हैं, जैसे भगवान ने जंगल में प्रदान किया था; ईश्वर ही वह है जो अब मेरा भरण-पोषण करता है।

"तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया, और मन्दिर के शिखर पर खड़ा करके उस से कहा, 'यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे, क्योंकि लिखा है, 'वह अपने स्वर्गदूतों को इस विषय में आज्ञा देगा।' आप।" जो कि भजन 91 से आया है। इसलिए, वह बाइबिल को भी उद्धृत कर रहा है। 'और वे तुझे हाथोंहाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांव में पत्थर से ठेस लगे।' और यीशु ने उससे कहा, 'दूसरी ओर, यह लिखा है। तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए।' यह व्यवस्थाविवरण 6, व्यवस्थाविवरण 6 के दूसरे खंड से एक उद्धरण है। इसलिए वापस जाओ और कहो : व्यवस्थाविवरण 6 का वह संपूर्ण खंड किस बारे में है: ईश्वर की शक्ति, वह कौन है, बिना परवाह किए ईश्वर का अनुसरण करना।

"फिर शैतान उसे बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और जगत के सारे राज्य और उनका वैभव दिखाया। और उस से कहा, 'यदि तू गिरकर मुझे दण्डवत् करे, तो मैं ये सब कुछ तुझे दे दूँगा। .' और यीशु ने उस से कहा, हे शैतान, जा; क्योंकि लिखा है, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आराधना करना, और केवल उसी की उपासना करना।" व्यवस्थाविवरण 6:13 . तो व्यवस्थाविवरण 6 का पूरा पहला भाग लीजिए। वह सब क्या था? भगवान की आज्ञाओं को याद रखें, याद रखें और उनका पालन करें।

इसलिए, मुझे यह कहना अच्छा लगता है कि शायद यीशु, जब वह जंगल में था, व्यवस्थाविवरण पर निवास कर रहा था और व्यवस्थाविवरण उन प्रलोभनों का सामना करने के लिए उसकी किलेबंदी थी, जिनका उसने जंगल में रहने के दौरान सामना किया था।

तो, अगले व्याख्यान के लिए, हम आगे बढ़ेंगे, और हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 9 से 11 को देखेंगे।

यह डॉ. सिंधिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह व्यवस्थाविवरण पर सत्र 4, अध्याय 5 से 8 है।